यमदीप एक अध्ययन

-जीत कौर

प्रस्तावना: यमदीप नीरजा माधव का प्रथम उपन्यास है जो वर्ष 2002 में सामयिक प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास मुख्यत: दो कथाओं को आधार बनाकर लिखा गया है जिसे लेखिका ने छब्बीस भागों में विभक्त किया है। पहली कथा किन्नर-वर्ग के जीवन व समाज पर आधारित है जो दीर्घकाल से हाशिए का जीवन व्यतीत करने पर विवश हैं तथा अपनी अधूरी देह के कारण समाज के पग-पग पर तिरस्कृत होना पड़ता है। दूसरी कथा स्त्री पर आधारित है जो समाज में अपनी अस्मिता के लिए छटपटाती हुई नज़र आती है। आज के समय में यदि देखा जाए तो स्त्री ने सफलता की ऊंचाइयों पर अपने कदम रखे हैं। बहुत सी महिलाएँ आत्मनिर्भर हैं परन्तु फिर भी कहीं-न-कहीं वह अपनी अस्मिता के लिए आज भी संघर्ष करती दिखाई पड़ती है, जिसका मार्मिक वर्णन लेखिका ने किया है। उपन्यास में किन्नर समुदाय के अंतरंग जीवन, उनके समुदाय से जुड़े रीति-रिवाज, उनके साथ होने वाले शोषण, उनकी भीतरी वेदना तथा समाज का हृदयस्पर्शी वर्णन डॉ. नीरजा माधव ने इस उपन्यास के माध्यम से किया है।

मूल शब्द: हिजड़ा, आर्थिक विपन्नता, खैरगल्ले, टेपकी, शोषण, मण्डली, भूख, कुमार्ग, कनबासी, बड़का, भ्रष्टाचार, देह-व्यापार, बुचरा माता इत्यादि।

किन्नर-वर्ग समाज का वह वर्ग है जो अपनी दैहिक अपूर्णता के कारण सदैव समाज में उपेक्षित रहा है। समाज में यह समुदाय अपनी अस्मिता को बचाए रखने के लिए निरन्तर संघर्ष कर रहा है। जिसके चलते इन्हें कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। हमारे मांगलिक एवं शुभ कार्यों को गति प्रदान करने के लिए यह समुदाय हमें अपना आशीर्वाद देने के लिए तत्पर रहता है किन्तु उनके प्रति हमारे मन एवं हृदय में हमेशा घृणा का ही भाव रहा है। उन्हें देखते ही हमारे भीतर ऊब, अप्रीति जैसे भाव उत्पन्न होने लगते हैं तथा उन्हें हिजड़ा कह-कह कर उन्हें विक्षुब्ध कर देते हैं। यमदीप उपन्यास की पात्र नाजबीबी जब स्कूल में अपनी पालित पुत्री सोना के दाखिले से सम्बंधी जानकारी हेतु स्कूल-प्रिंसिपल से मिलना चाहती है तो उसके प्रवेश करने पर रोक लगाई जाती है। यह देख नाजबीबी द्वारपाल से प्रश्न करती है कि- "पढ़ाई के लिए भी रोक-टोक है क्या, बाबू?"[1] किसी तरह तो वह स्कूल के भीतर चली जाती है लेकिन जैसे ही बच्चों की नज़र उस पर पड़ती है तो वह आपस में फुसफुसाने लगते हैं और एक लड़का कहने लगता है कि- "ऐ नितिन, उधर मत जाओ। वो देखो, हिजड़ा! मेरी मम्मी कहती है कि इसके पास मत जाना, नहीं तो पकड़ ले जाएँगे।"[2] किन्नरों को भी समाज का एक हिस्सा मानकर अन्य लोगों के जैसे ही हमें अपनी आने वाली भावी पीढ़ी में उनके प्रति द्वेष-भाव को दूर कर प्रेम-भाव

को उत्पन्न करना चाहिए परन्तु हम अपने साथ-साथ आने वाली पीढ़ी में भी इन लोगों के लिए घृणा का ही संचार कर देते हैं, जो बिल्कुल भी सही नहीं।

समाज की प्रत्येक व्यवस्था से दूर इस वर्ग को आर्थिक अभावों से जूझना पड़ता है। हमारे मांगलिक अवसरों में नाच-गाना ही इन लोगों के अर्थोपार्जन का एकमात्र साधन होता है। इस आर्थिक साधन के लिए भी इन किन्नरों ने अपनी-अपनी मण्डली के लिए क्षेत्र निर्धारित किए होते हैं, जिसके अन्तर्गत ही इन्हें नाच-गाने की अनुमति दी जाती है। यदि किसी कारणवश इन्हें दूसरी मण्डली के निर्धारित स्थान पर जाना पड़ा तो उस मण्डली के लोगों द्वारा विरोद्ध भी किया जाता है, यहाँ तक कि उनकी आपस में हाथापाही भी हो जाती है। इस दृश्य को उपन्यास यमदीप में भी नीरजा माधव ने चित्रित किया है। आर्थिक अभाव के कारण ही नाजबीबी सोना की शिक्षा को लेकर चिंतित होती है और कुछ पैसे प्राप्त होने के उद्देश्य से ही अपने समुदाय की दुसरी मण्डली के क्षेत्र में जाने का जोखिम मोल लेती है तथा घायल होकर लौटती है। इस बात को वह अपने गुरू से नहीं छिपा पाती है और उनके पूछने पर सच-सच बताते हुए कहती है कि, "ये चोट गुरुजी... ये चोट... खैरगल्ले के कारण लगी... सोच रही थी आपको हिस्सा देने आएँगे वो तो बता ही देंगे।"[3] अपने गुरू के लिए इन लोगों में काफी आदर सत्कार रहता है तथा अपनी दिन की कमाई में से एक हिस्सा गुरू को अवश्य देते हैं, इस नियम का पालन यह लोग बहुत ईमानदारी से करते हैं। क्योंकि माता-पिता के पश्चात यह गुरू ही होता है जो इनकी देखभाल करता है। अपने हर अच्छे-बुरे काम को यह अपने गुरु से सांझा करते हैं। गुरु से छिपाना इन्हें बैयमानी लगता है। नाजबीबी भी जब दूसरी गली में नेग लेने जाती है तो वहाँ पिटी जाती है, इस बात को वह अपने गुरु से नहीं छिपा पाती और कहती है, "गुरुजी, आपसे मैं नहीं छिपा सकती। मैंने बेईमानी की है, लेकिन एक नेक काम के लिए।"[4] आज के समय में बच्चे भी अपने माता-पिता के प्रति इनते ईमानदार नहीं हैं जितने यह किन्नर अपने गुरु के प्रति ईमानदार हैं।

आज के समय में लोग अपने घरों में इन तृतीय प्रकृति के लोगों का आना पसंद नहीं करते हैं। आधुनिकता के बढ़ रहे प्रभाव के कारण लोग सामाजिक परंपराएँ एवं प्रवृतियों को लगभग भूलते जा रहे है। अपने घरों में शुभ अवसरों पर किन्नरों का आना व नाच-गा कर नेग देना अब लोगों को धकियानूसी लगने लगती है, जिस कारण इस समुदाय के लोगों के आर्थिकोपार्जन में कमी पड़ने लगी है। कमाई कम होने पर इन्हें अब अपनी भूख भी सताने लगती है तथा पेट की आग को कम करने की विवशता से यह लोग कुमार्ग की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जिसका वर्णन लेखिका ने भी किया है। जब मल्लू नामक पात्र सबीना के विषय में बताता है कि आजकल वह नित-नए पुरुष कई संग दिखती है तो इस बात पर नाजबीबी कहती है कि, "अब धंधा बारहों महीने एक जैसा तो नहीं रहता... शायद इसी मजबूरी में आप सबीना को ऐसा करते देखते होंगे। नहीं तो हम कोई इंसान तो नहीं कि

हमारे तन की आग हमें ऐसा करने को मजबूर करे। बस पेट की आग से....।"[5] अत: भूख के कारण विवश होकर ही इन्हें गलत तरीके अपनाने पड़ते हैं।

अपने परिवार के प्रति इस वर्ग के लोगों की विशेष सहानुभूति रहती है। यह अपने माता-पिता की सेवा करना चाहते हैं। पढ़-लिख कर कुछ बनना चाहते हैं लेकिन ना तो माता-पिता इन्हें अपने पास रख पाते हैं और न यह अपनी चाह को पूरा कर पाते हैं। आज के समय में हम देखते हैं कि घरों में बुजुर्गों की स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है, जिस बच्चों को वह योग्य समझकर उनका पालन-पोषण करते हैं उन्हीं के द्वारा बाद में उपेक्षित समझे जा रहे हैं। तृतीय समाज में किसी के प्रति उपेक्षा, द्वेष का भाव न होने के पश्चात भी इन्हें अपनों से दूर रहने पर मजबूर किया जाता है जबकि यह अपने माता-पिता के साथ रहकर उनकी देखभाल व सेवा करना चाहते हैं। नाजबीबी भी अपने माता-पिता के प्रति चिंतित रहती है तथा उनसे संपर्क में रहती है लेकिन भाई को उसके साथ संपर्क रखना पसंद नहीं वह नाजबीबी को साफ-साफ कह देता है कि, "देखो तुम्हारा बार-बार टेलीफोन करना या इस परिवार से संबंध रखना, हमारी इज्जत तो बढ़ाता नहीं, उलटे तुम्हें भी दु:ख होता है और मम्मी-पापा को भी। तुम परिवार में रह नहीं सकतीं, हम रख भी नहीं सकते। इसलिए यह समझ लो तुम कि अनाथ हो। कोई नहीं तुम्हारा दुनिया में।"[6] उसका घर में आना जाना उसे अच्छा नहीं लगता है तथा माँ-बाबा को भी उससे दूर रहने के लिए कहता है। तो पिता विवश होकर नाजबीबी से कहते हैं, "बेटा, तुम्हारे बइया का स्वभाव अब पहले जैसा नहीं है। भाभी भी उसी जैसी है। इसलिए टेलीफोन से बात कर लिया करो।"[7]

किन्नर समुदाय के लोग आपस में किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं रखते। अपनी बस्ती में यह सभी लोग मिलजुल कर रहते हैं, चाहे किसी भी जाति, वर्ग, धर्म से सम्बंधित क्यों न हो यह किसी भी तरह का आपसी ऊंच-नीच नहीं देखते। अपने समुदाय में शामिल होने वाले व्यक्ति को यह अपना एक अलग नाम देते हैं जिससे वह इस बस्ती में जाना जाता है तथा एक नए नाम के साथ उसके नए जीवन को आरम्भ करते हैं। इंसानो के बीच होने वाली आपसी नफरत से यह स्वयं को दूर रखते हैं तथा इंसानो की अपेक्षा स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं। ईमानदारी और प्रेम को यह समुदाय अत्यंत महत्त्व देते हैं। महताब गुरु के इस कथन से इनके आपसी प्रेम व ईमानदारी का बोध होता है, "सबक लेना है तो हम हिजड़ों से लें| न हम लोग गद्दार हैं, ना हम लोग गद्दारी करेंगे। आपस में हम लोग प्रेम से रहते हैं और हम लोग किसी से नफरत क्यों करें? हम लोग इंसान थोड़े ही हैं कि आपस में नफरत करेंगे।"[8] बिना किसी भेद-भाव के रहना हिजड़ों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है, जिससे हम इंसानो को भी वर्ग-भेद से दूर रहकर आपस में एकता के साथ रहना चाहिए।

आधुनिकता का प्रभाव समाज पर तीव्रता से बढ़ता दिखाई दे रहा है, जिसके कारण मनुष्यों में संवेदनशीलता एवं इंसानियत जैसे भाव क्षीण होते दिखाई दे रहे है। लेकिन इस दृष्टि से देखा जाए तो इन किन्नरों

में इंसानो की अपेक्षा भिन्नता दिखाई देती है। यह स्वयं को इंसानो में शामिल नहीं मानते हैं लेकिन इंसानियत जैसे भाव कई दृष्टिगोचर होते हैं। उपन्यास में जब एक पागल स्त्री प्रस्व पीड़ा में कराह रही होती है तो नाजबीबी अपनी मण्डली के साथ वहाँ आसपास के लोगों से सहायता मांगती है लेकिन उसे किसी से सहानुभूति एवं सहायता की बजाय अपशब्द ही सुनने पड़ते हैं तो वह स्वयं उस स्त्री की सहायता के लिए उसके पास जाती है और उसे इस पीड़ा से बाहर निकालती है। स्त्री बच्ची को तो जन्म देती है लेकिन स्वयं मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। नाजबीबी के साथ-साथ उसके अन्य साथी भी यह देखकर घबरा जाते हैं तथा नाजबीबी से वहाँ से शीघ्र चलने को कहते हैं। इस बात पर नाजबीबी कहती है, "अब कोई पूछनहार नहीं इसका तो क्या हम भी छोड़ जाएंगे? अरे हम हिंजड़े हैं, हिंजड़े ... इनसान हैं क्या जो मुंह फेर लें।"[9] इस दृश्य को पढ़कर इतना तो बोध हो ही जाता है कि इंसान अपनी इंसानियत भूलते जा रहे हैं लेकिन जिन्हें समाज का उपेक्षित अंग माना जाता है वह इंसानो से कई अधिक इंसान दिखाई पढ़ते हैं।

किन्नर- वर्ग के अतिरिक्त इस उपन्यास में नीरजा माधव ने समाज के अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है। जिनमें राजनैतिक दाब-पेच एवं भ्रष्टाचार, नारी शोषण, समाज में वृद्धों की निरंतर बिगड़ती स्थिति आदि कई पहलू देखने को मिलते हैं।

राजनीति एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें राज्य की उन्नति एवं विकास के लिए नियम निर्धारित किए जाते हैं। परन्तु आज की राजनीति कुचक्रों में पड़कर केवल सत्ता लोलुपता की ओर ही अग्रसर होती दिखाई दे रही है। सत्ता को पाने के लिए आज के नेता- गण शोषण एवं भ्रष्टाचार के भागी बन रहे हैं जिसे लेखिका ने पात्र मन्नाबाबू के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सत्ता को पाने के लिए मन्नाबाबू अपने रास्ते से संतराव को हटाने के लिए गहरी चाल चलता है। वह कहता है, "मैं संतराव को तोड़ना चाहता हूँ। वह भी ऐसे कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।"[10] ऐसी राजनीति को देखकर भला समाज के विकास एवं हित के बारे में कैसे सोचा जा सकता है।

समाज में नारी उद्धारगृह जो कि स्त्री के उद्धार के लिए खोले गये हैं, उनमें भी नारी-शोषण देखने को मिलता है और जब यह देखा जाता है कि एक नारी के द्वारा ही यह कुकृत्य करवाया जा रहा है तो तब चिंता एवं दुख और भी बड़ जाता है। जब स्त्री ही द्वारा स्त्री सुरक्षित नहीं है, उसी के द्वारा वह छलि जा रही है तो स्त्री अपनी सुरक्षा की गुहार किससे करे, यह सोचने का विषय बन जाता है। इस कुकर्म में हमारे नेता लोग भी शामिल होकर उस दुष्ट स्त्री का साथ देते हैं, इतना ही नहीं स्वयं भी अबोध बालिकाओं को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। उपन्यास में पात्र रीता देवी, जिसे उद्धारगृह की संरक्षिका के रूप में रखा जाता है वास्तव में वही वहाँ पर रहने वाली बच्चियों का देह-व्यापार करवाती है, जिसका हृदयस्पर्शी चित्र लेखिका ने निम्न पंक्तियों के माध्यम से

प्रस्तुत किया है, "वो एक लड़की किसी तरह वहाँ से भाग निकली थी। उसी ने बयान दिया है कि वहाँ उन सबसे गलत धंधा करवाया जाता है। बड़े-बड़े लोग रोज आते हैं। उनमें से किसी को छांटकर कहीं ले जाते हैं और फिर पहुँचा जाते हैं। जो लड़की विरोध करती है उसे मारा-पीटा जाता है। सिगरेट से जलाया जाता है।" [11]

समाज का एक ओर घिनौना चित्र इस उपन्यास में उजागर हुआ है। समाज का पूज्यनीय-वर्ग आज हाशिए का जीवन यापन कर रहा है। अपने बच्चों के लिए निरंतर संघर्ष करते हुए उन्हें ऊंचाइयों की ओर तो ले जाते हैं लेकिन बुढ़ापे में उन्हीं बच्चों द्वारा उपेक्षित एवं प्रताड़ित होते दिखाई दे रहे हैं। जिन बच्चों को माता-पिता बड़े लाड़-प्यार से पालते हैं अंत में उन्हें माता-पिता की सेवा करने में घुटन होती है कहीं तो ऐसी स्थिति है कि लड़का अपने माता-पिता को अपने साथ रखना भी चाहता है लेकिन पत्नी से डरता है और कुछ निर्णय ले नहीं पाता है। वृद्धों की निरंतर बिगड़ती इस स्थिति को नीरजा जी ने अपने इस उपन्यास में पात्र तारक के माध्यम से बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। तारक का इकलौता पुत्र अप्ने माता-पिता को चाह कर भी अपने साथ नहीं रख पाता है क्योंकि उसकी पत्नी अपने सास-ससुर की सेवा करने को तैयार नहीं। निम्न पंक्तियां इसका उदाहरण हैं, "इकलौता बेटा अपना परिवार लेकर बंबई में बस गया था। बहू सास-ससुर की सेवा और खर्च उठाने को तैयार नहीं थी।" [12]

अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि नीरजा माधव द्वारा रचित उपन्यास अपने-आप में एक अद्वितीय कृति है, जिसमें किन्नर-वर्ग का अपनी अस्मिता के लिए किया गया जीवन-संघर्ष तथा इस संघर्ष के दौरान आने वाली समस्याओं को चित्रित करने की सफल पहल की है। किन्नर-समुदाय को प्रस्तुत करने के साथ-साथ लेखिका ने हमारे सभ्य समाज के कुछ विद्रुप कुकर्मों का भी यथार्थ चित्रण किया है। यह उपन्यास किन्नर समाज एवं जीवन का जीवंत दस्तावेज के रूप में पाठकों में सदैव चर्चित रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. माधव, नीरजा. यमदीप, सुनील साहित्य सदन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2018, पृष्ठ. 49
2. वही, पृ. 49
3. वही, पृ. 46
4. वही, पृ. 45
5. वही, पृ. 137
6. वही, पृ. 82
7. वही, पृ. 95
8. वही, पृ. 167
9. वही, पृ. 12
10. वही, पृ. 115-116
11. वही, पृ. 269
12. वही, पृ. 53